भरत ओळा की राजस्थानी कहानियों में अंधविश्वास पर प्रहारः एक विवेचनात्मक अध्ययन

मुकेश बलवदा

डॉ. पिंकी पारीक

1. **शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान**
2. **शोध निर्देशिका व सहायक आचार्य, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान**

अंधविश्वास का शाब्दिक अर्थ होता है–अंधा विश्वास। जब कोई व्यक्ति किसी भी बात पर बिना कुछ सोच–विचार के विश्वास करने लगता है तो वह अंधविश्वास होता है। अंधविश्वास विकास के लिए बाधक है। हमारे समाज में अंधविश्वास की जड़ें इतनी गहरी हैं कि उन्हें उखाड़कर फेंकना मुश्किल कार्य है। धार्मिक मान्यताओं, अज्ञानता, रूढ़ियों, परम्पराओं के चलते समाज में तरह–तरह के अंधविश्वास देखने को मिलते हैं।अंधविश्वास भय को जन्म देता है। हमारे पास जो है उसे खोने का डर और जो नहीं है उसे पाने की इच्छा, ये सब करने के लिए किए गए उपाय अंधविश्वास हैं।

आधुनिक युग में शिक्षा व विज्ञान के प्रभाव के बाद भी देश में धर्मान्धता की जड़ें बहुत गहरी जमीं हुई है। शिक्षित–अशिक्षित, ज्ञानी–अज्ञानी सभी इसके शिकार है। इस वैज्ञानिक युग में भी धार्मिक रूढ़ियों, पाखण्डों और धर्माधंता का शिकार अधिकत्तर महिलाएं होती हैं। वे अंधविश्वासों के कारण साधु–संतों के चमत्कारों द्वारा ठगी जाती हैं। सामाजिक जीवन में धार्मिक पाखण्ड और अंधविश्वास ने समाज विरोधी तत्वों को बढ़ावा दिया है। इसके कारण समाज में एक नया वर्ग पैदा हो गया है जो नित नए देवताओं और धार्मिक विश्वासों का भय दिखाकर साधारण जनता का शोषण कर रहा है।

समाज में व्याप्त अंधविश्वास को केन्द्रीय साहित्य अकादमी से पुरस्कृत राजस्थानी कहानी के प्रमुख कहानीकार भरत ओळा ने देखा है और उस पर जमकर प्रहार किया है। वैसे तो भरत ओळा के कई राजस्थानी में कई कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं लेकिन उनके 'भूत' कहानी संग्रह की कहानियों में अंधविश्वास पर जमकर लेखनी चलाई है।

भरत ओळा के कहानी संग्रह 'भूत' की कहानी 'अनुराधा, राजकुमार अर भूत' में अनमेल विवाह के उपरांत लड़की की स्थिति का चित्रण किया है। इस कहानी की नायिका अनुराधा बचपन में एक राजकुमार से प्यार करती थी लेकिन अनुराधा की शादी एक अधेड़ उम्र के बदसूरत व्यक्ति खेताराम से कर दी जाती है। जब शादी होती है तो वह खेताराम को देखकर सोचती है –''नीं तो राजकुमार जैड़ी उण री बुरसट ही अर नीं काची–कंवळी काया। वौ अेक पाकौ मिनख हौ, जिकौ बूढ़ौ नीं तौ अधखड़ जरूर हौ। पछै वो राजकुमार कीकर लाग सकै हौ?''[1] लेकिन फिर भी वह उसके साथ आराम से रहना शुरू कर देती है। खेताराम शादी के कुछ दिनों बाद ही ट्रक ड्राइवरी करने गुड़गांव चला जाता है। अनुराधा को उसके ससुराल वाले पीहर भी नहीं भेजते हैं तो अनुराधा चिंता से ग्रस्त हो जाती है और उसे राजकुमार के सपने आने लगते हैं। सपने में वह बड़बड़ाने लगती है। उसके घरवाले सोचते हैं कि अनुराधा को भूत लग गया है। वो उसकी झाड़–फूंक करवाते हैं। लेकिन उसका कोई असर नहीं होता। एक दिन स्कूल में एक बच्चे ने मास्टर जी को बताया कि मेरी भाभी को भूत लग गया है। तब मास्टर जी उनके घर जाते हैं और अनुराधा की सास से बात करते हैं तो वह कहती है–''कांई बतावां जी! गड़बड़ घणी ई मोटी है। डोरा–डांडा स्सै करा धाप्या। घर ई कीला लियौ अर सरेवड़ै नै ई पितास लियौ, म्हारै तौ करमां–कारी कोनी लागी नीं।''[2] तब लेखक अनुराधा से बात करते हैं और उसको समझाते हैं कि अब खेताराम ही तुम्हारा राजकुमार है। खेताराम को भी गुड़गांव से घर बुला लिया जाता है और वह घर पर ही पिक–अप चलाने का काम करने लगता है। अनुराधा ठीक हो जाती है। इस प्रकार इस कहानी में यह बताया गया है कि किस प्रकार अनमेल विवाह के कारण लड़की की जिंदगी बर्बाद हो जाती है और उसकी बीमारी को भूत प्रेत का साया बता दिया जाता है।

इसी संग्रह की दूसरी कहानी 'गुनै रौ भूत' में गुलाब नामक लड़की की कहानी है। गुलाब पढ़ने वाली और सुंदर लड़की थी। उसकी शादी एक पहले से शादीशुदा, उम्र में बड़े और कुरूप व्यक्ति मनरूप से कर दी जाती है। मनरूप एक शराबी है और अनेक प्रकार के नशा करता है। गुलाब उसे समझाती है लेकिन वह नहीं मानता। तब गुलाब उसे छोड़कर पीहर आ जाती है। पीहर में उसके घरवाले उसे नहीं रहने देते हैं तो वह अपनी बहन कीर्ति के घर आ जाती है। कीर्ति बीमार रहती है तो गुलाब घर और बच्चों को सम्भाल लेती है। लेकिन वहां रहते अपने जीजा हरपाल की बुरी नजरों की शिकार हो जाती है। वहां आकर

वह पढ़ाई शुरू करती है। कॉलेज में उसकी मुलाकात सरजीत नामक व्यक्ति से होती है और वह सरजीत से प्यार करने लगती है। सरजीत उससे शादी करना चाहता है लेकिन वह सरजीत की शादी अपनी बहन की लड़की से करवा देती है। शादी के बाद भी सरजीत और गुलाब मिलते रहते हैं। एक दिन कीर्ति उन दोनों को एक साथ देख लेती है और चिंता से लकवे की शिकार हो जाती है। गुलाब जब कीर्ति को चाय पिलाने आती है तो कीर्ति लकवे की हालत में उससे कहती है–'' थूं म्हारी कद री...दुस...मण..अबैं म्हारी बेटी.. रौ ई...एक घ..र..तौ डाकण ई छो...ड़ै...?''[3] यह कहकर कीर्ति बेहोश हो जाती है। तब से गुलाब मानसिक रूप से बीमार हो जाती है। गुलाब का जीजा उसे लेखक के पास लेकर गया और बताया–''जितै स्याणा अर डोरा–डांडाळा कनै जा सकै हा जा लिया पण कोई इण री ओपरी–पराई नीं काढ सक्यौ। दौ–च्यार पीर–महात्मा कनै ई गया हा पण वां ई हाथ पाधरा कर दिया। आ मानौ कै घणकरीक जिग्यां धक्का खायनै आपरी सरणा आयां हां।''[4] इस प्रकार इस कहानी में यह बताया है कि किस प्रकार अनमेल विवाह के कारण जिंदगी बर्बाद हो जाती है।

राजस्थानी कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर भरत ओळा के कहानी संग्रह 'भूत' की कहानी 'भूत री कारस्तानी' में एक संतानहीन महिला की दयनीय स्थिति को उजागर किया है। वह अंधविश्वास के कारण एक महाराज के पास जाती है। महाराज द्वारा संतानहीन महिलाओं के इलाज के नाम पर शोषण किया जाता है। वह गांव के बाहर एक अखाड़े में रहता है। जिस महिला के बच्चा नहीं होता, उसे वह अखाड़े में बुलाता है और उनका देह शोषण करता है। जो महिला उसका विरोध नहीं करती है और वह गर्भवती हो जाती है तो गांव में लोग कहते हैं–'' महाराज दुखिया रौ दुख काट दियौ। गवाड़ मांय अेकर फेरू हवाई फूटगी,' म्हाराज अेक निपूति नै और वरदान दियौ है।''[5] यदि कोई महिला महाराज का विरोध कर देती है तो उसे मौत के घाट उतार दिया जाता है और पूरे गांव में एक ही चर्चा होती है–'' रात अेक लुगाई बिना म्हाराजजी रै हुकम अखाड़ै कानी आयगी बतायी पण अखाड़ै पूगण सूं पैला ई भूतां तौड़ दी। घराळा लास नै भूतां री खोह सूं लेयग्या बताया।''[6] इस प्रकार संतानहीन महिलाएं संतान की चाह में शोषण का शिकार होती हैं या मौत के घाट उतार दी जाती हैं।

भरत ओळा के कहानी संग्रह 'भूत' की कहानी 'चीथिजता सुपना' में लेखक ने अंधविश्वास और शादी में दहेज पर होने वाले खर्चे पर करारी चोट की है। कहानी की नायिका किस्तुरी अट्ठाइस वर्ष की हो गई है। उसका पिता धर्मसिंह शराब पीता है वह अपनी लड़कियों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता है। किस्तुरी शादी ना होने के कारण मानसिक रूप से परेशान हो जाती है। धर्मसिंह कहता है–''अे रै, म्हैं किस्तुरड़ी नै कोनी परणा सकूं। कठै सूं ल्यावूं पांच–सात लाख रिपिया ?''[7] वह घरवालों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कभी अपने बाल काट लेती है तो कभी आग उछालती है कभी स्वयं ही लव लेटर लिखकर रख देती है। तो घरवाले सोचते हैं कि किस्तुरी को भूत लग गया है। किस्तुरी की माँ कहती है–''छोरी रै तौ कोई बला चिपगी।''[8]

इसी कहानी संग्रह की दूसरी कहानी 'टूम, धनकोरी अर आग–बला' कहानी में अंधविश्वास का चित्रण किया है। इस कहानी में बताया है कि गाँव में काशी की बहू के गहने चोरी हो जाते हैं तो किसी हजरतवाले को बुलाया जाता है जो चोरी करने वाले का शीशे में चेहरा देखकर नाम बता सके। अह काशी के घर आता है और शीशा लेकर उसमें एक बच्चे को दिखाता है। वह बच्चे से पूछता है–''कुण है लुगाई क माणस ?'

'अेक लुगाई है।'

'कांई पहर राख्यौ है ?'

'घाघरियौ–ओढ़णियौ।'

'लंबी है का ओछी ?'

'लांबी।'

'सावळी है का गोरी ?'

'सावळी।''[9]

इस प्रकार हजरतवाले के कहने पर चोरी का आरोप बंती की बहू पर लगा दिया जाता है। वह बार–बार कहती है कि मैंने चोरी नहीं की है और वह बदनामी के डर से आग लगाकर आत्महत्या कर लेती है।

इसी कहानी संग्रह की कहानी 'थाकळ भूत' में भी अंधविश्वास का चित्रण किया है। कहानी का नायक जोगीराम है उसके पिता खेती करते हैं। अपने पिता को खेती में परेशान होते देखकर जोगीराम बैंक की तैयारी करने लगता है। वह अब्दुल कलाम को पढ़कर सोचता है कि उसे बैंक मैंनेजर बनना है। जोगीराम का पिता उससे कहता है कि बेटा रेलवे की तैयारी करले, बी.एड. करले। जोगीराम को ये दोनों ही नौकरी पंसद नहीं थी। एक दिन जोगीराम टेलीविजन देख रहा था। तब उसमें एक महाराज प्रवचन दे रहे थे। जोगीराम उनका नंबर लेकर फोन करता है और पूछता है कि–

''महाराज मेरी नौकरी कब लगेगी?

तब महाराज ने कहा– डेढ़ साल तक तो नौकरी का योग नहीं है।

महाराज किसमें लगेगी मेरी नौकरी?

रेलवे में ट्राई करो, वही लगती है।''[10]

अब जोगीराम बैंक की तैयारी छोड़कर रेलवे की तैयारी शुरू कर देता है लेकिन उसे तो रेलवे की नौकरी पंसद ही नहीं थी। वह विक्षिप्त सा हो जाता है। लेखक को जोगीराम की माँ कहती है–''म्हैं तो आप ई केई दिनां सूं देखूं। छोरै रै कीं लाग–लपट तो है। म्हैं आप ई काले आखा उंवारनै छोड़ राख्या है। कैवौ तौ मंथरी नै दिखा ल्यायूं।''[11] उसके पास बैंक का लेटर आता है लेकिन उसकी जॉइन करने की तारीख निकल चुकी थी। एक दिन जब उसका रेलवे का लेटर आता है उसी दिन जोगीराम का रेल के आगे एक्सीडेंट हो जाता है। इस प्रकार अंधविश्वास के चक्कर में एक युवक की जिंदगी बर्बाद हो जाती है और वह अपनी जान गंवा बैठता है।

इसी कहानी संग्रह की कहानी 'खुराफाती भूत' में अंधविश्वास की आड़ में हिरणों का शिकार किया जाता है और उनका माँस बनाकर खाते हैं। लेखक का दोस्त हरपाल भूतों के बारे में लेखक को बताता है–''तेरलै दांई हौ अेक बाबू। भूत तो कांई, वौ तौ देई–देवता नै ई कोनी मानतौ। अेकर जोहड़ी कनै पजग्यौ। थावर री स्याह काळी रात। जोहड़ीआळै बूढ़ियै पीपळ तळैकर लंघण लाग्यौ। कुण टिपण देवै हौ। खोपड़ी पकड़नै ऊपर चक लियौ। पुरसल बांग ई कोनी लागी। आ दुरगत होई कै कांई पूछौ बात। सात दिनां सूं जायनै तौ लास पाई।''[12] यह कहानी सुनकर लेखक वहाँ जाकर देखता है तो पता चलता है कि कुछ लोग हिरण को

मारकर उसकी खाल उतारने और उसका माँस बनाकर खाने के लिए जंगल में पीपल के पेड़ पर भूत बताते हैं ताकि रात को वहाँ से कोई व्यक्ति ना जाए और उनके अपराध का किसी को पता ना चल सके।

इसी कहानी संग्रह की कहानी 'बाईपास रौ चाळौ' में भी अंधविश्वास का चित्रण किया है। लिखमाराम शहर में वैष्णव भोजनालय चलाता था। इससे उसका घर का काम चल जाता था। कुछ समय बाद शहर के बाहर से बाईपास निकल गया तो लोग उस बाईपास से जाने लगे। बाईपास बनने से वैष्णव भोजनालय चलना लगभग बंद सा ही हो गया। तब लिखमाराम लोगों को भूतों की कहानियाँ सुनाकर उनका बाईपास से जाना बंद करवा दिया। जब लेखक लिखमाराम के पास जाता है तो लिखमाराम बताता है–''लारला दिनां नाळी(घग्घर नदी) मांय बस पळटी। सुण्यौ होसी? डलेवर तौ लाई आपरी धुन मांय बगै हौ। कोतकण झट आ ऊभी होयी सड़क बिचाळै। बस पूरी खैंचेड़ी ही। ब्रेक क्यां रा लागै हा! दौ–अेक झोला तौ खाया, पछै जा बड़ी नाळी मांय।''[13] इन्ही भूतों की कहानियों के डर की वजह से लोगों ने बाईपास से जाना बंद कर दिया और वापस शहर के अंदर से जाने लग गए। अब लिखमाराम का भोजनालय वापस चलने लग गया।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भरत ओळा की कहानियों में समाज में व्याप्त अंधविश्वास पर करारी चोट की है। ओळा ने बताया है कि किस प्रकार अंधविश्वास के कारण अधिकांशतः महिलाओं का ही शोषण किया जाता है और कुछ लोग अंधविश्वास की आड़ में जानवरों की तस्करी का धंधा करते हैं। कई बार अंधविश्वास के कारण लोगों को अपनी जान तक गँवानी पड़ती है।

संदर्भ सूचीः

1. भरत ओळा 'भूत' कहानी संग्रह एकता प्रकाशन चूरू, 2013, पृष्ठ संख्या 13,14,
2. वही, पृष्ठ संख्या 10
3. वही, पृष्ठ संख्या 96
4. वही, पृष्ठ संख्या 80
5. वही, पृष्ठ संख्या 61
6. वही, पृष्ठ संख्या 62

7. वही, पृष्ठ संख्या 28
8. वही, पृष्ठ संख्या 29
9. वही, पृष्ठ संख्या 75
10. वही, पृष्ठ संख्या 66
11. वही, पृष्ठ संख्या 68
12. वही, पृष्ठ संख्या 42
13. वही, पृष्ठ संख्या 37